भाग-2 खण्ड 1 - 2

चैतन्य लहरी

1990

पूजा विशेषांक

"हम एक लहर के अग्रभाग पर बैठे हैं, जहाँ से हम इससे भी अधिक ऊँची लहर पर छलांग लगाने वाले हैं। परन्तु आप में योग्यता होनी चाहिए। यदि आप समुद्र में तैरना नहीं जानते तो डूब जायेंगे। - श्री माताजी निर्मला देवी

खण्ड 1-2

नव वर्ष सहजयोग के सुनहरी युग की घोषणा करता है। श्री माता जी की कृपा से नव युग के प्रारम्भ के लिये परम चैतन्य विश्व में चमत्कारिक परिवर्तन लाया। हम यद्यपि समझ न सके हों, 1989 वर्ष के लौह-आवरण को वेध परम माँ का चित्त बहुत से सुखदायी अचम्भे लाया। प्राचीन ग्रंथों की भविष्यवाणी के अनुसार रूस में हजारों की संख्या में लोग साक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं तथा वहाँ से यह सेजी से पूर्वी देशों में फैल रहा है। पूर्व-मध्य देशों के प्रवेशद्वार तुर्की को भी श्रीमाता जी ने आशीर्वादित किया है। श्री माँ का चित्त अफ्रीका तथा चीन की ओर जा रहा है और इस प्रकार पृथ्वी ग्रह विराट के शरीर में एक अति आनन्दमयी अंश बन जायेगा। ओ-परम माँ नव वर्ष में हम आपसे प्रार्थना करते हैं।

अलिबाग में श्रीमाता जी के परम चैतन्य की करुणा वर्षा से हमारी खोज की तीर्थ यात्रा शुरु हुई। वहाँ माँ ने सभी जिज्ञासुओं को बहुमूल्य शिक्षा दी। वहाँ से तीर्थ यात्री औरंगाबाद तथा श्री रामपुर की ओर बढ़े। पुणे झील के किनारे कि समस्त पूजा एक दुर्लभ आनन्द अनुभव था। ईसा के अवतरण का महत्व बताते हुये श्री माता जी ने समझाया कि ईसा सम पवित्र किस प्रकार बनें। यह अनुभव इतना शक्तिशाली था कि हम में से बहुतों ने माँ की वार्ता के मध्य अपने पुनर्जन्म का अनुभव किया। ब्रह्मपुरी पूजा में उन्होंने बल दिया कि सन्त होने के नाते मानव उत्थान के लिये हमें कठिन परिश्रम करना है। आनन्दमयी सांगटी पूजा में नववर्ष मनाया गया। यहाँ विवाहों की घोषणा की गई तथा श्री माता जी ने गहनता पूर्वक विवाह सम्बन्धों के विषय में बताया। गणपतिपुले का कार्यक्रम तो एक स्वर्गीय अनुभव था जिसका वर्णन केवल रविन्द्रनाथ टैगोर की कविता में ही हो सकता है:-

उन्मुक्त उल्लास में नाचते हुये "भारत के तट पर माँ जाग उठी है"।

अलीबाग पूजा वार्ता - 17-12-1989

श्री माता जी निर्मला देवी द्वारा

आप सबका स्वागत है। हम सब अब यहाँ पहुँच चुके है तथा सामूहिक यात्रा द्वारा हम इस तीर्थ यात्रा का आरम्भ करेंगे। यात्रा अत्यन्त सूक्ष्म प्रकार की है। यदि आप अपने यहाँ होने का लक्ष्य समझ सकें तो यह भी समझ सकेंगे कि पूरा राष्ट्र आप सबको देख रहा है और प्रयत्नशील है कि आपका उत्थान हो। आप अपनी गहराई को जानें तथा आत्म आनन्द प्राप्त करें। सड़के आदि अच्छी न होने के कारण यात्रा बहुत आरामदेह नहीं होगी। फिर भी यह हमारी उत्थान यात्रा है।

पश्चिम में हमारी गति बहुत बढ़ गई है। इस गति को कम करने के लिये हमें ध्यान प्रणाली का प्रयोग करना होगा जिससे अपने अन्दर ही शान्ति का अनुभव हम कर सकें। विचार भी हमारे मस्तिष्क पर बमबारी कर रहे हैं। अपने विचारों तथा दूसरों के प्रति हम शीघ्र ही प्रतिक्रियाशील हो उठते है। अतः मनुष्य के अपने अन्दर की घटनाओं का ज्ञान होना चाहिये। विचार आप पर गोलाबारी कर रहे है। उत्थान के प्रयत्न में विचारों से छुटकारा पाना आपके लिये कठिन है। आपका अहं तथा परिस्थितियाँ इस विचार-जाल को जन्म दे सकती है। केवल यहीं दो समस्यायें है। आपको तलकारा जा रहा है। आपके सम्मुख गाँव के यह सादे लोग सब कुछ देखते है फिर भी उन पर कोई प्रतिक्रिया नहीं। यदि आप प्रतिक्रिया हीन हो जायें तो विचार आपको छोड़ देंगे। अतः सर्वप्रथम आपको देखना है कि आपमें प्रतिक्रिया न हो।

परन्तु आप तो अपनी तथा अपने इर्द-गिर्द के सौंदर्य, स्तब्धता, सूक्ष्मता तथा गौरव का आनन्द अनुभव कर रहे है। अपनी इस आदत को आपने समाप्त नहीं करना केवल इसकी देखभाल करनी है। इसके विषय में अधिक बातचीत या विचार भी अनावश्यकक है। क्योंकि यदि आप एक वृक्ष को देखते है तो इसके विषय में क्या सोचना। यह तो पेड़ ही है। यदि आप इसके विषय में सोचें भी तो भी यह पेड़ ही रहेगा।

अतः तनिक सा बुद्धू दिखाई पड़ने में भी कोई बुराई नहीं है। वास्तविकता यह है कि जब हम आलोचना करने लगते हैं तो अपने ही स्नायुतन्त्र को विकृत करते है तथा अपने मन मस्तिष्क को विषाक्त। अतः किसी वस्तु की आलोचना किये बिना तथा उसके विषय में सोचे बिना वस्तु को देखना ही वास्तविकता है।

प्रतिक्रिया किये बिना किसी वस्तु को देखने की क्षमता का स्तर यदि आप प्राप्त कर लेते है तो आप वास्तविकता में है। केवल तभी अपने चहुँ ओर अपने सम्बन्धों, अपनी मित्रता तथा पूर्ण ब्रह्माण्ड की सूक्ष्मता का रहस्य ज्ञान आपके अन्दर जागृत होता है। इसी कारणवश मैंने कहा है कि इस तीर्थयात्रा में पहली स्मरणीय बात आत्म ज्ञान है। जब आप दूसरों के विषय में, उनके आचरण, व्यवहार, त्रुटियों आदि के विषय में सोचते है तो कोई लाभ नहीं होता। यह सब कार्य अपने नेताओं के लिये छोड़ दीजिये। यह आपका कार्य नहीं। मैं अफसर प्रवृत्ति के कुछ लोगों को जानती हूँ जो स्वभाववश अनहोनी सलाह देते रहते है। अपरिवर्तनशील वस्तुओं के विषय में सोचना मन, चित्त और विचारों का दुरुपयोग है। अतः हमें वस्तुओं को उनकी वास्तविक स्थिति में स्वीकार कर लेना चाहिये।

स्वीकार करना ही आनन्द मार्ग है। परन्तु स्वीकार का अर्थ मजबूरन सहन करना नहीं। सहन करने के लिये आपके मन मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है। अतः वस्तुओं को जैसी है उसी स्थिति में स्वीकार करके ही लोग आगे बढ़ते है।

मैंने लोगों को स्वीकार करते देखा। पृथ्वी माँ की प्रवृत्ति की तरह यह उनकी शक्ति तथा गंभीरता का प्रतीक है। पृथ्वी जो है वही है और वह हर चीज को स्वीकार करती है। यदि आप पृथ्वी पर कोई भारी चीज रखें तो वह समान विरोध शक्ति द्वारा उसे स्वीकार करती है। वह नहीं कहती कि मैं इस भार को सह रही हूँ। वह केवल इसे स्वीकार कर रही है। अतः चीजों को वस्तुस्थिति में स्वीकार करने से ही ज्ञान तथा साक्षी भाव विकसित होता है। मेरे विचार में अमुक प्रकार से यह अच्छा होता ऐसा कहना बेकार की बात है।

"मेरी पसन्द" दूसरी समस्या है। मैं केक खाना चाहता हूँ लेकिन केक उपलब्ध नहीं, क्या करूँ? जो भी उपलब्ध है केक के समान ही उसका आनन्द लो। सदा अपनी "पसन्द" के विषय में सोचते रहने से आप कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। जो उपलब्ध है, वही मेरी पसन्द है और यही वास्तविकता भी है। जो उपलब्ध ही नहीं, आप बेशक उसे पसंद करते हों, कोई क्या कर सकता है।

अपनी पसंद-नापसंद के शिकार हम इस प्रकार हो जाते है कि हमारी इस दुर्बलता का लाभ उठाने लोग उठाते है। दूरदर्शन, समाचार पत्रों के माध्यम से वे हमारी दुर्बलता को और बढ़ावा देते है तथा हम इन परिस्थितियों के दास

बन जाते है "मै गुलाब के अतिरिक्त और कोई अन्य फूल नहीं पसन्द करता"। लेकिन क्यों, इस प्रकार परिस्थति बंधन मे हम वास्तविक आनन्द खो देते है।

आन्तरिक आनन्द को पाना दूसरा भाग है। यह स्थान किसी भी तरह सुखदायी नहीं है, तो मै यहाँ क्या हूँ? एक दूसरे से आनन्द पाने के लिए। स्वानन्द प्राप्त करने को। अहँ तथा परिस्थिति बंधनों को भाने वाले बाह्य प्रलोभनों की ओर जितना हम बढ़ेंगे उतना ही हमारा मस्तिष्क इनमें लिप्त होगा और हम किसी भी वस्तु का आनन्द न ले पायेंगे।

अब हम एक सूक्ष्म बंधन की ओर आते है। राष्ट्र तथा समूहवाद का सूक्ष्म बंधन। समूहवाद बड़े सूक्ष्म रूप से शुरू होता है। यह असुरक्षा का ही एक प्रकार है। अतः हम पशुवतः समूह बनाने लगते है। असुरक्षा से भय ग्रस्त पशु और मनुष्य तो ऐसा कर सकते है। परन्तु सन्त और देवदूत नहीं। उनकी कोई राष्ट्रीयता नहीं होती अतः वे झुंड नहीं बनाते। राष्ट्रीयता भी एक बन्धन है। सन्तों का कोई देश विशेष नहीं होता। जिसे जैसे और जहाँ से आना था आ चुका। हमें याद रखना है कि हम सब सहजयोगी है। हमें अपने देशों को भूल कर आपस मे घुलना-मिलना है। कृपया झुंड न बनाइए। इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हवाई अड्डे से बस मे बैठते ही हम अपने समूह बनाने लगते है, जो हमारे लौटने तक चलते है। झुंड तोड़ कर भिन्न देशों तथा भिन्न राष्ट्रीयता के लोग यदि साथ रहें तो अच्छा होगा। परस्पर बातचीत कीजिए, एक दूसरे को समझिये। सहजयोग की समस्याओं को एक दूसरे से जानिये। किसी देश विशेष मे सहजयोग की क्या समस्याएँ है और वहाँ क्या हो रहा है?

पढ़ना सबसे बुरा बंधन है। अन्तर-ज्योति के बिना पढ़ने का कोई लाभ नहीं। प्रदर्शन मात्र के लिए अभी भी लोग अपनी पहले की पढ़ी हुई बातों को याद रखे हुए है। दूसरों की सुनना कहीं अच्छा है। दूसरों को बोलने दीजिए।

सहजयोग मे आप किस विषय पर वाद-विवाद करेंगे? मै नहीं समझ पाती कि किसी भी चीज़ पर आप कैसे वाद-विवाद कर सकते है। यह हरे रँग की वस्तु है। अब इसके विषय मे आप क्या वाद-विवाद कर सकते है। इस पर सब वाद विवाद व्यर्थ है। सहजयोग सहजयोग मे वाद-विवाद अनावश्यक है। मै समझ नहीं पाती हम क्या विचार विमर्श करने वाले है। आप सब जानते है। आप जानते है कि कुंडलिनी कैसे उठती है और चक्र कैसे साफ है। आप जानते है कि साक्षात्कार कैसे प्राप्त होता है। आप जानते है कि कौन कहाँ पकड़ मे है और उसका प्रभाव क्या है। यदि यह सत्य है तो है ही। आप इसके विषय मे क्या वाद-विवाद करेंगे। वाद-विवाद का अब अन्त हो गया है। आप गूढ़-ज्ञानी है। आपके पास जो ज्ञान है वो आप सबको प्राप्त है। आप केवल अपने अनुभवों की बात कर सकते है। सहजयोग मे आप अपने सम्बन्धों तथा आनन्द की बात कर सकते है। वाद-विवाद नहीं। मैने वाद-विवाद करने वाले लोगों के बारे मे सुना है। मै समझ नहीं पाती कि सहजयोग मे वाद-विवाद कैसे हो सकता है।

अपने ज्ञान को दूसरों से अधिक बताने के लिए या कोई भिन्न राय देने को वाद-विवाद होता है। सहजयोग मे "दूसरी राय" है ही नहीं। यदि किसी को नाभि की पकड़ है तो उसे नाभि की ही पकड़ है। इस पर दूसरी राय क्या हो सकती है। तो जब हमारी राय भिन्न-भिन्न होती है तो किसी न किसी के राह से भटके होने की पूरी सम्भावना है, परन्तु आप सब जानते है कि वह व्यक्ति भटक गया है। इसमें विवाद का प्रश्न ही नही उठता। आप परिणाम पर पहुँच जाते है। जब एक सत्य का बोध आपको हो जाता है तो यह {सत्य} परम-चैतन्य की परिधि मे पहुँच जाता है और इसकी चिंता आपका कार्य नहीं रह जाता। आपको यह चिंता परम् चैतन्य पर छोड़ देनी है, सब ठीक हो जायेगा। यह देश सन्तों तथा योगियों की भूमी है, यही कारण है कि गरीबी, असुविधाओं के बावजूद भी पश्चिमी देशों की उपलब्धियों को न जानते हुए भी यहाँ के लोग चिन्तित नहीं है। मै रूस गयी। वह महान् देश है। वहाँ बहुत लोगों को साक्षात्कार प्राप्त हुआ है। मै आश्चर्यचकित थी कि कैसे ये लोग सहजयोग मे आये और कैसे इन्होने सहजयोग को स्वीकार किया।

भारत के ग्रामीण लोग सहजयोगी नहीं, तो भी सन्तों का मान करते है। उनकी नज़र मे सन्त किसी भी अन्य चीज से अधिक महत्वपूर्ण है। आपसे कोई कुछ नहीं माँगेगा। यदि आप कुछ देना भी चाहेंगे तो भी कोई नहीं लेगा। यही आधारभूत अन्तर है जिसे हमें समझना चाहिए। भौतिकवाद भारत की अपेक्षा पश्चिम मे जल्दी कार्य करता है। और व्यक्ति को इस विषय मे सावधान रहना है। क्या हम भौतिकता के गर्त मे सभा रहे है? निस्संदेह मै भी एक बड़ी क्रेता हूँ। मै आप सब के लिए खरीदती हूँ। मेरे और आपके खरीदने मे अन्तर यह है कि प्रेमवश मुझे आप सबके लिए खरीदना होता है। मै जानती हूँ कि जहाँ मै जाऊँगी - सब कुछ सस्ते दामों पर उपलब्ध होगा। सदा ऐसा ही होता है। मै जब भी खरीददारी करने जाती हूँ तो, चाहे 400 व्यक्तियों के लिए ही क्यों न हों, मुझे सब कुछ वहीं मिल जाता है। जब आप खरीदने को जायें तो आपको पता होना चाहिए कि आपने क्या खरीदना है। मैने सहजयोगियों को गैर सहजयोगियों के लिए खरीदते हुए देखा है। हमें समझना है कि हम सब एक शरीर है। एक हाथ को दूसरे हाथ की देखभाल करनी चाहिए। जब हम खरीदारी को जायें तो हमें सोचना चाहिए कि हम दूसरे सहजयोगियों के लिए क्या खरीद रहे है।

आपको अवश्य याद रखना है कि आप तीर्थयात्रा पर है और हमें अपनी चेतना में आगे बढ़ना है। यदि आप चेतना में नहीं बढ़ सकते तो इसका कोई लाभ नहीं। एक बार जब आप इस प्रकार सोचने लगेंगे तो अपने लाभ तथा उपलब्धि को देख आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे।

"यह करो, यह मत करो" - आदि का स्थान सहजयोग में नहीं। मेरे विचार में कोई अधिक अनुशासनबद्धता भी नहीं है। क्योंकि सहजयोग ही आपको अनुशासित कर देता है। मुझे आपको कुछ नहीं बताना। सहजयोग एक अग्नि है, यदि आप अपना हाथ इसमें डालेंगे तो यह जलेगा ही - आप चाहें या न चाहें। इसी प्रकार यदि आप सहजयोग के विरुद्ध कोई कार्य करेंगे तो आपको दण्ड भुगतना ही पड़ेगा। आप अपनी चैतन्य लहरियों को तो बिल्कुल भी नहीं खोना चाहते और न ही दुःखी होना चाहते है। अतः इस बार आप अपने तथा अपने उत्थान के प्रति पूर्ण सम्मान और गहन सूझ-बूझ द्वारा एक बहुत ही आनन्ददायक तथा गम्भीर दृष्टिकोण अपनायें।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करें।

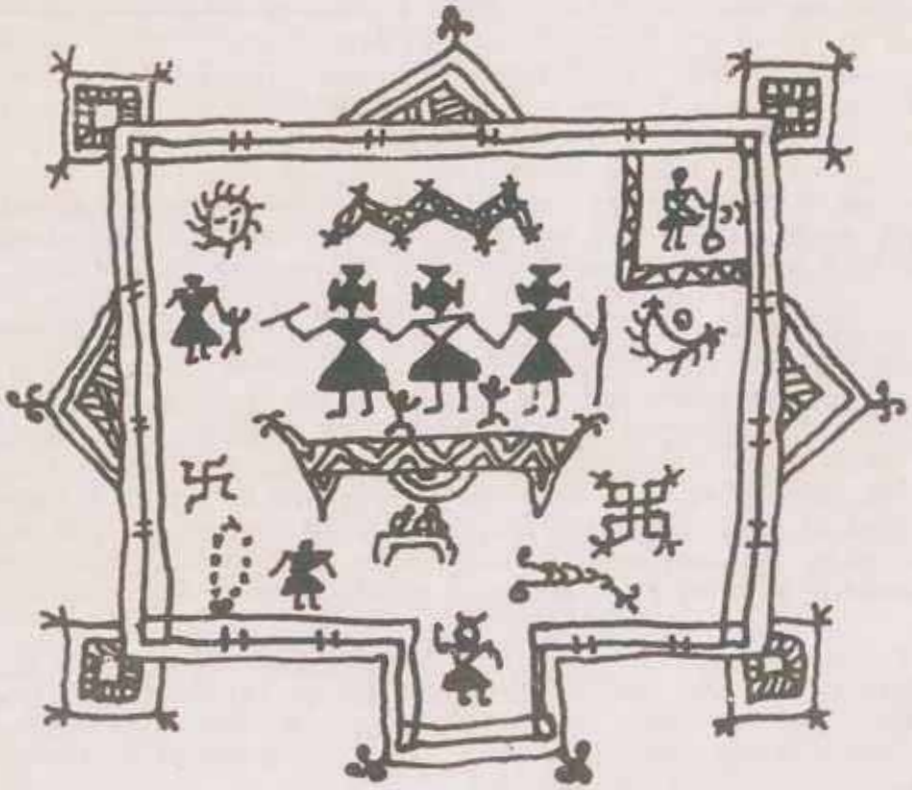

"औरंगाबाद पूजा वार्ता"

19-12-1989

द्वारा : श्री माता जी निर्मला देवी

मेरे जीवन में औरंगाबाद का विशेष महत्व है, क्योंकि यहाँ से बहुत नज़दीक मैं था, नामक स्थान, जोकि मूलतः प्रतिष्ठान के नाम से जाना जाता था, से मेरे पूर्वज संबंधित है। महाकाव्य रामायण के लेखक वाल्मीकि ऋषि यहाँ रहते थे। वाल्मीकी ऋषि के आश्रम बहुत से स्थानों पर थे, इस कारण से बहुत से झगड़े भी उठ खड़े हुए है। वास्तव में वाल्मीकि इस क्षेत्र में यहाँ रहते थे। गोदावरी नदी, जो कि प्रतिष्ठान की ओर जा रही थी, के दूसरी ओर शालि वाहनों का राज्य था।

सीता जी यहाँ रही। उनका एक पुत्र रूस चला गया और दूसरा चीन। चीन जाने वाले पुत्र का नाम कुश और रूस वाले का लव था। रूस के लोगों को स्लाव का लेब कहा जाता है। जो चीन को गये थे वे कुशाण कहलाते हैं।

यहीं समीप ही विशाल काय तथा चुस्त चालाक और बुद्धिमान पशुओं में विकास के लिए एक बहुत बड़ा संघर्ष हुआ। चुस्त पशुओं ने बहुत से विशालकाय पशुओं को समाप्त कर दिया। नदी में बहुत से मगरमच्छ थे। जब हाथियों का राजा गजेन्द्र पानी पीने के लिए आया तो एक बड़े मगरमच्छ ने उस पर आक्रमण कर दिया। हाथियों का वंश समाप्त करने के लिए उसने ऐसा किया। श्री विष्णु यहाँ प्रकट हुए और मगरमच्छ को मारकर गजेन्द्र की रक्षा की। इन विशालकाय पशुओं में से आज केवल हाथी ही बचे है, यही कारण है कि इस स्थान को गजेन्द्र मोक्ष कहा जाता है।

वाल्मीकि लोगों को लूटा करते थे। वे मछुआरों की जाति के थे। जब नारद नामक संत यहाँ आये तो उसने उन्हें भी लूटा। नारद जी ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है? अपनी पत्नि, बच्चों तथा परिवार के पोषण के लिए, वाल्मीकि ने उत्तर दिया और कहा कि मैं अकेला कमाने वाला हूँ। नारद जी ने फिर पूछा कि क्या तुम्हारे बच्चे भी तुम्हारे लिए इतना बलिदान कर सकेंगे? वाल्मीकि को इसका पूरा विश्वास था। बच्चों तथा परिवार की परीक्षा के लिए चार साधुओं ने वाल्मीकि को मृतक के समान उठा और उनके घर ले गये। वहाँ उनके परिवार के सदस्यों ने संतों से कहा कि लूटते हुए वह व्यक्ति मर गया है। यदि इसके परिवार का कोई सदस्य इसकी जगह जान देने को तैयार हो जाये तो वह बच सकता है। पर कोई भी इसके लिए तैयार न हुआ। वाल्मीकि उठकर खड़ा हो गया और उसे अपनी गलती का आभास हुआ। नारद ने उसे राम-राम जपने को कहा। परन्तु वह केवल मरा-मरा ही कह सका, जो कि राम-राम ही बन गया। नारद ने उसे प्रायश्चित् करने का कहा। वाल्मीकि एक पर्वत पर इस कार्य के लिए बैठ गया। यह पर्वत वाल्मीकि पर्वत के नाम से जाना जाता है। दीमक ने उसके शरीर को गर्दन के सिवाय पूरा खा डाला। तब विष्णु जी प्रकट हुए, उसके शरीर से दीमक को हटाया और उसे साक्षात्कार दिया। संस्कृत भाषा में दीमक को वाल्मी कहते है। इस प्रकार उसका वाल्मीकि नाम पड़ा।

इसके बाद की कहानी में सीता जी यहाँ आयी। इस प्रकार रामायण का एक महत्वपूर्ण भाग यहाँ घटित हुआ। शालिवाहनों ने वाल्मीकि मंदिर बनाने में बड़ी मदद की और वाल्मीकि जी को सम्मानपूर्वक अपना गुरु माना। वास्तव में बहुत समय पूर्व उनका गुरु घोंडिल्य था। नीरा नदी के समीप हमने यहीं कुछ जमीन भी ली है।

यहाँ के लोगों के मन में ईश्वर का भय है और वह संतों का सम्मान करते है। उन्हें पता है कि सच्चा संत कौन है। जब हम आत्मा के सुख के विषय में सोचते है तो आत्म प्रकाश से जीवन भर जाता है और इस प्रकाश के प्रति हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन आने लगता है। मुझे आशा है कि आप इस बात को समझेंगे। यहीं नहीं अपने सद्गुणों के प्रति हमें पूर्ण विश्वास हो जाता है और हम इनका आनन्द लेते है। हम कह सकते है कि इस संस्कृति में कोई धूर्तता या बनावट नहीं है। यहाँ न तो लोग बार-बार आपको धन्यवाद कहेंगे और न ही खेद प्रकट करेंगे। प्रायः वे हाथ भी नहीं जोड़ेंगे। विशेषतया स्त्रियाँ पुरुषों के सामने हाथ जोड़कर नमस्कार नहीं करेंगी। वे केवल ईश्वर के सम्मुख ही हाथ जोड़ते है।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करे।

श्री रामपुर पूजा वार्ता

21-12-1989

द्वारा :- "श्रीमाता जी निर्मल देवी"

आपको मुझे बहुत ही वस्तुएँ देना या बहुतेरे अर्पण प्रस्ताव करना बहुत महत्वपूर्ण नहीं, आपने कितने लोगों को साक्षात्कार दिया, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण बात है। आपकी क्या अवस्था है? क्या आप विकसित हो गये है? क्या आप स्वतंत्र हो गये है? क्या आप बंधनमुक्त और अहं मुक्त हो सकते है? क्या आप अति विनम्र, सुन्दर, करुणामय और सामुद्रिक व्यक्तित्व बन गये है? अन्तर-दर्शन (स्वयं को देखना) का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है।

कार जब तक ठीक अवस्था में न हो हम उसे चला नहीं सकते। इसी प्रकार आपका अस्तित्व यदि हास्यास्पद स्थिति में है तो आपका उत्थान नहीं हो सकता। यह वास्तविकता है। हर चीज़ में से आनन्द की प्राप्ति हमारी उपलब्धि का चिन्ह है। यदि हमारा बर्तन छोटा है तो इसमें बहुत कम आनन्द समा सकता है। परन्तु यदि यह सागर समविशाल है तो आनन्द रूपी सभी नदियाँ इसमें आ गिरेंगी। अतः आनन्द की मात्रा, मनोरंजन की नहीं, महत्वपूर्ण है। मैं छिछोरे या सस्तेपन की बात नहीं कर रही, मैं उस गहन-ध्यान-आनन्द की बात कर रही हूँ जो आप अपने अन्दर पाते है। यह आपके अन्दर उमड़ उठता है, आपको आनन्दित करता है और आप यह समझ भी नहीं पाते कि आप प्रसन्न क्यों है। केवल अपने आनन्द का मज़ा लेते है। जब ऐसा हो तो व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि वह अपने-योगी बन गया है। इस अवस्था में आप यह आनन्द बाँटना चाहते हैं। इसे अपने तक सीमित रखना नहीं चाहते। आप इसे फैलाना चाहते है। इस आनन्द को दूसरों को देना चाहते है। इसे दूसरों तक पहुँचाये बिना आप खुश नहीं हो सकते। अतः पहले आप पूँजीवादी बनिये और फिर साम्यवादी।

पहली बात है कि हमने कितना आनन्द पाया, और दूसरी कि हमारे मस्तिष्क में अब क्या है? सहजयोग को हम बाहर की ओर कैसे फैलायेंगे। सर्वप्रथम प्रकाश को बढ़ाना है, तब स्वतः प्रकाश फैलेगा। हमारा स्वयं से क्या संबंध है? झुंड न बनाने के लिए मैं पहले कह ही चुकी हूँ। कुछ लोगों की बहुत अधिक गर्दन हिलाने की आदत बन गयी है। गाते हुए वे अपने शरीर और गर्दन को हिलाते हैं। आप अपने शरीर को हिला सकते है, परन्तु गर्दन शरीर के साथ ही हिलनी चाहिए। ध्यान में जाने से पहले स्वयं को देखिये, अपनी कमियों को देखिये, तब मेरे फोटोग्राफ के सामने ध्यान में जाइये। जब हम आ रहे थे मैंने कहा "यह रास्ता गलत है" उन्होंने कहा माँ आप कैसे जानते है? बस मैं जानती हूँ। किसी चीज को जानने के लिए यह आवश्यक नहीं कि आप इसके विषय में हर बात को जानें। यह आपके चैतन्य बनने का चिन्ह है। हर चीज की चेतना होने का यह मतलब बिल्कुल नहीं कि आप बैठ जायें और कहें "यह बहुत सुन्दर है या यह बहुत उत्तम है"। यह कोई बात नहीं। प्रमाणित करने या आलोचना करने के लिए नहीं परन्तु जो भी आप जानते है उसे वातावरण में अनुभव कीजिए। हमारे पास एक बहुत बड़ा मस्तिष्क है. और सिर के अंदर दो खंड। यह केवल एक मस्तिष्क नहीं है, परन्तु दो खण्ड है और जब चेतना आपको प्रकाश देने लगती है तो आप अपने अन्दर हर चीज को जानना शुरू कर देते है और शान्त रहते है। आप न तो कोई दावा करते है और न ही अपना दबाव डालने के लिए कोई चालाकी करते है। आप केवल जानते हैं और यही सुन्दर कार्य व्यक्ति को करना है। एक अन्य बहुत महत्व-पूर्ण बात मैं आपको बतलाऊँगी। भारत में आप अच्छी तरह अपने बालों को सँवार कर रखिये नहीं तो लोग समझेंगे कि आप भिखारी है। केवल भिखारियों के बाल इस तरह के होते है। बालों में तेल डालिये और इन्हें कायदे से सँवारिये।

आपको अपने ललाट (माथे) पर गर्व होना चाहिए। यह एकादश है। अपने इस एकादश से आपको पूरे विश्व से युद्ध करना है। रात्रि के समय बालों में तेल डालिये। यह आपको बहुत आराम पहुँचायेगा। आपको बहुत अच्छा लगेगा। विशेषतया जिगर के (लीवर) के रोगियों के लिए यह बहुत आवश्यक है। उन्हें अपने सिर पर तेल अवश्य लगाना चाहिए, क्योंकि वे बड़े सुश्क लोग होते हैं। उनके बालों में तेल न होने के कारण बाल बढ़ते नहीं और वे जल्दी ही गंजे हो जाते है।

आपको मेरे बताये बिना ही सहज् संस्कृति को व्यक्त करना है, इसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना है। निर्णय करने का प्रयत्न कीजिए कि आपका चित्त कहाँ है। हर समय अपने चित्त पर चित्त को रखिये। मेरा चित्त कहाँ है? श्रीमान् चित्त जी आप कहाँ खोये है? और यह आपके लिए कार्य करेगा।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करें।

क्रिसमस पूजा वार्ता

25-12-1989 - पुणे

द्वारा:- श्री माता जी निर्मला देवी

आज हम ईसा का जन्म मनाने का एकत्र हुए है। जब हम उनके जन्म के विषय मे सोचते है तो हमे पता चलता है कि वे एक साधारण स्थान जन्मे तथा पूरा जीवन साधारण रूप मे ही व्यतीत किया। एक सहजयोगी होने के नाते आप जानते है कि वे गणेश का अवतरण थे, जो कि वास्तव मे अबोधिता ही है। धर्मान्ध लोगो की मूर्खता के कारण ही उनका बलिदान हुआ। वे एक शाश्वत शिशु थे। जब हम ईसा तथा ईसाई-धर्म के विषय मे बात करते है तो जान पड़ता है कि ईसाई धर्म ईसा से पूर्णतः उल्टी दिशा मे चला गया है। यदि एक सृजन है तो दूसरा विनाश, यदि एक अबोधिता है तो दूसरा धूर्तता। जहाँ-तहाँ भी ईसाई धर्म प्रचलित है वहाँ (अचम्भे की बात है) अबोधिता का कोई सम्मान नहीं। सतीत्व, जो कि ईसा का सार तत्व है, का वहाँ कोई स्थान नही। पवित्रतातत्व से ही ईसा बने थे। कभी-कभी आघात पहुँचता है कि इन तथाकथित राष्ट्रो ने अपने असंख्य लोगो को सब तरह के दुष्कार्यो मे लिप्त होने की आज्ञा देकर किस सीमा तक ईसा का अहित किया है।

ईसा का अति साधारण प्रकार से जन्म लेना, ध्यान देने की दूसरी बात है। एक बढ़ई के पुत्र होने के नाते वे बढ़ई की तरह ही रहे। परन्तु पश्चिमी देशो मे लोग बहुत ही भौतिकतावादी है। अपव्ययतापूर्ण जीवन-यापन, वैभव प्रदर्शन, दूसरो का धन लूटना, भौतिक लाभ के लिए देश के बाद देश लूट लेना उनके लिए अति साधारण कार्य है। वे इसे अनुचित नहीं समझते । ऐसा करना उनके लिए गर्व का विषय है।

ईसा की महानता इस बात मे निहित है कि वे चाहते थे कि लोग परस्पर प्रेम करे और नम्र बने, परन्तु ईसाई राष्ट्रो का घमण्ड औ अत्याचार देखकर यह समझ नहीं आता कि वे तनिक भी ईसा के समीप है? ईसा ने कहा है "धन्य है वो जो नम्र है"। वे नम्र लोग कहाँ रह रहे है? पश्चिमी देशो मे तो नही है। उन देशो मे तो नहीं है जिनमें ईसा की पूजा होती है, जहाँ ईसा के सम्मान मे बड़े-बड़े गिरजे बनाये जाते है और जहाँ वर्षो से कुमारी माँ की पूजा होती है। यह कहना कि हम ईसा के पद-चिन्हो पर चलते है और साथ ही इतने भयंकर अपराध करना ईसा के प्रति घोर अपराध है। ऐसे सब लोगो को नरक मे जाना पड़ेगा। वे बेशक इसे न समझ सकें, लेकिन वे नरक को प्राप्त कर रहे है। वे समस्याओं मे घिर चुके है। ईसा को बलिदान करने वाले लोगो से भी ये लोग बुरे है। प्रतिदिन एक क्रूसारोपण होता है।

ईसा लोगों की सब ज्यादतियाँ सहते थे, परन्तु इस सब त्याग के परिणाम इतने भयावने है कि कभी-कभी मै चिन्तित हो जाती हूँ कि कहीं मेरे प्रति भी ये लोग कुछ ऐसा ही न करें।

ईसा के कथनानुसार अब आप लोगो को पुर्नजन्म हुआ है। ईसा ने जिस अवस्था की बात की थी, आपने वह प्राप्त कर ली है। आप विशेष प्रकार के लोग है, मुझे कभी ऐसी आशा न थी। पहली भेंट बहुत भयंकर थी। मैंने सोचा भी न था कि इतने लोग पार हो जायेंगे, परन्तु आपमें से बहुतों ने पार होकर ईसा के नाम को महिमा प्रदान की। मै आपसे प्रार्थना करुँगी कि अब आप सहजयोगी है और ईसा के अनुयायी। शास्त्रों मे वर्णित गूढ-ज्ञानी आप है। जिन्हे ज्ञान प्राप्त है, वही लोगो को मुक्त होने मे सहायता प्रदान करेंगे। आश्चर्य की बात है कि मैने पाया कि पाश्चात्य जीवन मे विध्वंसकारी विचार भी अबोधिता को समाप्त न कर सके। परन्तु अब से मै यह कहूँगी कि इस प्रकार की मूर्खता त्याग दी जाये।

ईसा का जीवन एक तपस्वी का जीवन था, एक निर्लिप्त व्यक्ति का जीवन था। अतः ईसाई मत से आने वाले सहजयोगियो को समझना है कि मूर्खताओ से छुटकारा पाने के लिए वे ईसा की तरह बनें।

ईसाईयो मे विवाह पूरी जीवन-शैली पर छाया रहता है। सहजयोग मे यह शैली असंगत है। विवाह मे यदि एक साथी ठीक न हो तो वह दूसरे पर भी बुरा प्रभाव डालता है। इससे पूरा व्यक्तित्व ढक जाता है। हिन्दुओं और मुसलमानो मे ऐसा नही है। मेरा कहने से अभिप्राय है कि मै भी विवाहित हूँ, परन्तु यह विवाह मेरे पूर्ण अस्तित्व पर छा नहीं जाता। यह ऐसा कर भी कैसे सकता है? समस्या यह है कि जब भी कोई चीज़ प्रचलित होती है। इसकी कठिनाई का सामना मुझे हर समय करना पड़ता है। विवाह होते है और मुझे पत्र आने शुरु हो जाते है। "मेरे विवाह के साथ ऐसी घटना घटी" यह सिर दर्द है। ये अपने पतियो का, पत्नियों का तथा सहजयोग का नाश कर देंगे। ये ईसाई मस्तिष्क सहजयोग के महत्व को बहत ही तुच्छ कर देता है। ईसा ने जिस तरह का जीवन लोगो के लिए

सोचा था और जिस तरह से लोग जी रहे हैं उसमें, तनिक भी समानता नहीं। अतः सहजयोगियों के लिए यह आवश्यक है कि वे गरिमा और विवेक को अपनायें और यह समझें कि वो सहजयोग में उतर गये हैं, विवाह आदि का अधिक महत्व नहीं। यह जीवन का लक्ष्य नहीं है।

मुझे लोगों के विवाह करने पड़ते हैं, क्योंकि मेरा विश्वास है कि वे उचित विवाहित जीवन व्यतीत करें। बिना विवाह किए यदि आप सन्यास ले लेंगे तो आप ढोंगी भी बन सकते हैं। परन्तु इसका अभिप्राय यह भी नहीं कि विवाह सभी कुछ है। इसका इतना महत्व नहीं है। यह केवल एक घटना है जो घटित होती है। यह प्रार्थना से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। और न ही यह ध्यान से अधिक महत्वपूर्ण है। इस का महत्व आपके भोजन करने से अधिक कतई नहीं। इसको जितना अधिक तूल आप देते हैं, आप उसी गर्त में गिरना शुरु हो जाते हैं, जिससे मैंने आपको निकाला है।

हम नरक में से निकल चुके हैं। अब आप गरिमामय और विवेकशील बनें। महत्वहीन वस्तुओं को इतना महत्व देने से आप ऊँचे नहीं उठ सकेंगे। परन्तु मैं यह भी नहीं कहती कि आप शादी नहीं करो। आप अवश्य विवाह करो। यदि आप एक सहजयोगिनी हैं और सहजयोग के विषय में जानती हैं तो निस्संदेह आपको और सहायता मिलेगी। आपको अधिक शांति, अधिक आनन्द और अधिक सूझ-बूझ प्राप्त होगी, जोकि बहुत अच्छी है। परन्तु आन्तरिक संबंध बहुत महत्व-पूर्ण है। मैं देखती हूँ कि जिस पुरुष से लड़कियाँ शादी करती हैं उसी से प्रेम में बंध जाती हैं और समाप्त। पुरुष भी समाप्त और स्त्री भी समाप्त। इस महान् अवसर पर मैं आपको बताती हूँ कि ईसा का जन्म निष्कलंक अवधारणा द्वारा हुआ। इसी प्रकार मैंने भी आपको आपका दूसरा जन्म दिया और आप इतने पवित्र हैं। अतः सारी अशुद्धियों को आप अच्छी तरह देखें। मैं जानती हूँ कि आप इन अशुद्धियों को पसन्द नहीं करते फिर भी यह इधर उधर से घुस आती हैं।

अगर आपको इस स्तर पर आना है तो स्वयं को सीढ़ियों से ऊपर रखना पड़ेगा। आप सोचते हैं कि आपने एक व्यवस्थित परिवार, व्यवस्थित बच्चे पाकर बहुत बड़ी उपलब्धि पा ली है और अब हर समय इन बच्चों की चिन्ता में लगे रहते हैं। नहीं यह दूसरा प्रलोभन है, एक बहुत बड़ा प्रलोभन। अतः ईसा के जन्म के इस महान् अवसर पर हमें स्वयं को कहना है कि हम सहजयोग के प्रति समर्पित हैं। यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और बाकी सब कुछ गौण।

हम एक लहर के अग्रभाग पर बैठे हैं, जहाँ से हम इससे भी अधिक ऊँची लहर पर छलाँग लगाने वाले हैं। परन्तु आप में योग्यता होनी चाहिए। यदि आप समुद्र में तैरना नहीं जानते तो डूब जायेंगे। अतः हमें योग्यता विकसित करनी है। ईसा का उदाहरण हमारे सामने है। कितना सुन्दर जीवन था। एक मानव की तरह से वे नम्रतापूर्वक जिए। कितने स्पष्ट रूप से सत्य को उन्होंने कहा। इसी प्रकार आप में भी वह शक्ति आयेगी। जिससे आप जान सकेंगे कि अपनी राष्ट्रीयता से बढ़कर आप बहुत कुछ हैं। आप एक उच्च व्यक्तित्व हैं, ईश्वर के साम्राज्य में रहने वाले एक सहजयोगी हैं। यही आनन्द है। परिवार और बच्चों का आनन्द नहीं, परमात्मा का आनन्द है।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करें।

ब्रह्मपुरी पूजा वार्ता

-30-12-1989-

द्वारा - श्रीमाता जी निर्मला देवी

ब्रह्मपुरी की तरह से बहुत से छोटे-छोटे स्थान है जहाँ सन्तों ने बहुत से लोगो की भलाई के लिए कार्य किया, क्योंकि वे सामुहिक थे। इस देश की दरिद्रता को वे सह न सके। कुछ लोग दावा कर रहे है कि हम लोगो को भाग्यवादी बना रहे है। यह पूरी तरह गलत है, क्योंकि कोई भी संत ऐसा नहीं करता। सन्तो ने सदा लोगो को कठिन परिश्रम करके अपनी समस्याओं का हल ढूँढने के लिए कहा। उन्होने समाज की बुराईयो की ओर भी इशारा किया। सन्त जाकर हिमाचल पर्वत मे नहीं बैठ गये। समाज की मुक्ति के लिये कार्य करने को वे स्थान-स्थान पर गये।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करे।

संक्रान्ति पूजा

14-1-1990 - क्रतवे

द्वारा :- श्री माता जी निर्मला देवी

आज का दिन भारत मे हम सब के लिए उत्सव मनाने का दिन है। क्योंकि अब सूर्य मकर रेखा पर है और यहाँ से यह कर्क रेखा के क्षेत्र मे प्रविष्ट होता है। जब सूर्य पुनः पृथ्वी पर आता है तो धरा माँ की सृजनशक्ति कार्यशील हो जाती है और वह अत्यन्त सुन्दर वस्तुएँ यथाफूल, पौष्टिक तथा प्रीतिदायक फल और आँखो को शान्त करने वाली हरियाली का सृजन करती है। सूर्य के आगमन से बहुविधि पृथ्वी माँ हमे धन्य करती है।

इसी प्रकार सहजयोग रूपी सूर्य भी उदय हो चुका है और अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच रहा है और इसने, निसंदेह, प्रथम तत्व {मूलाधार} पर परिणाम भी दिखाये है। आपके मूलाधार की कुंडलिनी रूपी सृजनात्मक शक्ति का उत्थान होता चला गया, जिसने आपके आत्म तत्व को खोला और आपके जीवन मे शुभ परिणाम प्रदर्शित किए। इसने आपके जीवन को सुन्दर, आनन्दमय और प्रसन्नता से परिपूर्ण बना दिया। अब हम एक ऐसे स्थान पर है, जहाँ से हमे एक नई छलाँग लगानी है, एक नयी उड़ान भरनी है। इस नयी उड़ान के लिए हमे अपने विचारो तथा बंधनो मे बहुत ही हल्का-फुल्का होना है। आप बहुत ही बंधनलिप्त है। मेरी समझ मे नहीं आता कि किस प्रकार आप ऐसे तुच्छ तथा विवेकहीन बंधनों मे बंधकर सो जाते है।

यह ऊँची छलाँग जो आपने लगानी है, इसमे बहुत से लोग पिछड़ जायेंगे। अतः इस स्तर पर मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप स्वयं को पूर्णतया ध्यान तथा सामूहिकता के प्रति समर्पित कर दें। प्रतिदिन स्वयं से प्रश्न करें कि "मैंने सहजयोग के लिए और स्वयं के लिए क्या किया है?"

कृपया समझने का प्रयत्न कीजिए कि बहुत बड़ी छलाँग है जो आपको लगानी है। इसका तेज आरम्भ होना है, जिसके लिए मै चाहूँगी कि आप तैयार रहें। पूरी तरह से तैयार, क्योंकि इस छलाँग मे आपके खो जाने की संभावना है। अपने बंधनों पर काबू न पा सकने के कारण बहुत से लोग पीछे भी छूट सकते है।

बंधन बहुत प्रकार के हैः अज्ञानता, अंधविश्वास तथा बहुत से अन्य बंधन। देश, जाति, कार्यविधि तथा बहुत सी अन्य वस्तुएँ, जिनसे हम दूसरो के विषय मे निर्णय करते है, भी हमारे बंधन है। क्या हम सहज संस्कृति मे है? इस मापदण्ड से हमें स्वयं की जाँचना है अन्यथा हमारे लिए हमे पार ले जाने वाले जहाज पर सवार होना कठिन हो जायेगा। मै तुम्हे चेतावनी देती हूँ कि बाद मे ये न कहिए कि श्री माता जी बहुत से लोग पीछे छूट गये है। यदि आप किसी को

पिछड़ता पाये तो उसकी सहायता करने का प्रयत्न करें। स्पष्ट आवाज तथा स्पष्ट शिक्षा द्वारा कृपया उसे सुधारने का प्रयत्न करें। यदि वास्तव में आप किसी को गलती करता हुआ पाते है तो उसके हित में उसे चेतावनी दीजिये। मै आज आपको बता रही हूँ कि यह बहुत ही निर्णायक समय है और इसमें से किसी को भी सहजोग को अनुदत्त (ग्रान्टिड) नहीं समझ लेना है।

आपका यह सोचना कि आपकी सांसारिक वस्तुएँ ठीक-ठाक है और आप उनका प्रबन्ध कर सकते है आदि एक छलावा है। ईश्वर किसी धनी या निर्धन की चिन्ता नहीं करते, वे देखते है कि आपके पास अध्यात्मिकता का कितना धन है? वे आपकी शिक्षा, प्रमाण-पत्र और चमक दमक की परवाह भी नहीं करते। परमात्मा देखते है कि आप कितने निश्चछल (अबोध) है, आपने सहजयोग के लिए कितना कार्य किया है। आपने ईश्वर के लिए क्या किया है। अतः ये सारी प्राथमिकताएँ आप अवश्यक बदल दें। मै आपको बता दूँ कि सहजयोग आपको बहुत ही सूक्ष्मता से परखता है। इस अन्तिम निर्णय में आप लोगों को बहुत अच्छा माना गया है। परन्तु यह दूसरी छलांग जो हम लगाने वाले है, इसके प्रति हमें बहुत सावधान रहना है। जो लोग ये सोचते है कि वो अन्दर से सहजयोगी है, परन्तु यदि वास्तव में नहीं है तो इस होने वाली लम्बी छलाँग में वे पीछे छूट सकते है।

अतः सूर्योदय होकर सूर्य का चोटी तक पहुँचना महत्वपूर्ण है, क्योंकि जिस सूर्य ने हमारे चहूँ ओर सुन्दर हरियाली रचनी शुरु कर दी है, वही सूर्य चोटी पर पहुँच कर अपने ताप से हमें झुलस भी सकता है। अतः व्यक्ति को सावधान रहना है और ये समझना है कि उसे हर समय सहजयोग के मार्गदर्शन में चलना है। हमारे अन्दर क्या कमी है? हमें क्या बोझिल बना रहा है? क्या चीज़ है जो हमें दुःसाध्य बना रही है?

अभी तक मै बहुत प्रसन्न हूँ कि जो मै आपको बताती रही हूँ, जो मार्गदर्शन आपको देती रही हूँ उसे बड़ी शान्ति तथा माधुर्य के साथ स्वीकार किया। और अपने इसे अपनी जीवन शैली में आत्मसात् करने का प्रयत्न किया। वास्तव में कुछ समय बाद मैं नहीं सोचती कि आपको कुछ बताने की आवश्यकता रहेगी। उचित-अनुचित को देखने के लिए आपको अपनी ज्योति प्राप्त हो जायेगी। फिर भी मै कहूँगी कि पूजा में, संगीत में और हर कार्य में आपको अपना हृदय खोलना है। आपको केवल अपना हृदय खोलना है। यदि आप अपना हृदय नहीं खोल सकते तो यह कार्य नहीं करेगा, क्योंकि हृदय के अन्दर निवास करने वाली आत्मा के जरिये सहजयोग कार्य करता है। जब आप सहजयोग के लिए अपना हृदय खोलने का निर्णय कर लेंगे तो आपके बंधन तथा आपका अहं मिट जायेगा।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करें।